https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

नई दिल्ली | के.वि.सं. (मु.)

संस्करणः सितंबर 2025
वर्ष-1, अंक- 1
4 पृष्ठ

केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

संपादकीय

परीक्षा पे चर्चा : भय से उत्सव तक

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी पहल

परीक्षा पे चर्चा गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परीक्षाओं को लंबे समय तक केवल अंक और परिणामों से जोड़ा गया, जिसके कारण विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों में तनाव और चिंता का वातावरण बना रहता था। ऐसे परिदृश्य में 'परीक्षा पे चर्चा' एक अभिनव, सहृदय एवं प्रेरणादायी पहल के रूप में सामने आई है। मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना और नेतृत्व में आरंभ हुआ यह कार्यक्रम मात्र संवाद भर नहीं है, बल्कि यह एक राष्ट्रीय जनांदोलन बन चुका है, जिसने पूरे देश की सोच को इस दिशा में परिवर्तित किया है कि परीक्षा भय का नहीं, उत्सव का प्रतीक है।

इस कार्यक्रम की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है प्रधानमंत्री का बच्चों से व्यक्तिगत जुड़ाव। प्रत्येक वर्ष वे प्रधानमंत्री की औपचारिक भूमिका से आगे बढ़कर प्रधान शिक्षक के रूप में सीधे विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों से संवाद करते हैं। उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार यह संदेश देता है कि देश का सर्वोच्च पदभार संभालने वाला व्यक्ति किस प्रकार भावी पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य एवं भावनात्मक संतुलन के प्रति संवेदनशील है। इस पहल ने न केवल विद्यार्थियों को आत्मविश्वासपूर्वक परीक्षा का सामना करने का साहस दिया है, बल्कि अभिभावकों को भी यह दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया है कि अंकतालिका केवल एक पड़ाव है, संपूर्ण यात्रा नहीं।

हाल ही में MyGov मंच पर 3.53 करोड़ से अधिक पंजीकरण के साथ गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड का बनना इस कार्यक्रम की व्यापक जनस्वीकृति और प्रभाव का सजीव प्रमाण है, जिसमे केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने विशेष भूमिका निभाई हैं। के.वि. के विद्यार्थी इस कार्यक्रम में केवल प्रत्यक्ष सहभागिता नहीं करते, बल्कि कार्यक्रम के मंच संचालन की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाते हैं। देशभर के 1250 से अधिक केन्द्रीय विद्यालयों से चुनिंदा विद्यार्थियों को नई दिल्ली में आयोजित मुख्य समारोह में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है, वहीं अन्य सभी विद्यालय अपने परिसरों में सीधे प्रसारण से जुड़कर इस दिवस को सामूहिक उत्सव के रूप में मनाते हैं।

परीक्षा पे चर्चा-2025 की तैयारियों के क्रम में 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के अवसर पर 567 केन्द्रीय विद्यालयों में राष्ट्रव्यापी क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह क्विज़ देशभक्ति-प्रधान वेब सीरीज़ 'भारत हैं हम' पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता में केन्द्रीय विद्यालयों सहित नवोदय विद्यालयों, पीएम श्री विद्यालयों, सीबीएसई तथा राज्य विद्यालयों के 55,000 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को मा. प्रधानमंत्री की प्रेरक पुस्तक एग्जाम वॉरियर्स एवं डिजिटल प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। यह आयोजन साहस और ज्ञान का वास्तविक उत्सव था, जो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को सच्ची श्रद्धांजलि है।

परीक्षा पे चर्चा केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि अध्ययन का उत्सव, संवेदनशील नेतृत्व का प्रतीक और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका का स्मरण है। यह हमें सिखाता है कि राष्ट्र की असली नींव कक्षाओं में रखी जाती है, और साथ ही अपने ज्ञान से दूसरों का मार्गदर्शन करना ही सच्चे नेतृत्व का आधार है।

~प्राची पाण्डेय
आयुक्त

शिक्षण एक गतिशील प्रक्रिया

सीखने के लिए पढ़ाएं और पढ़ाने के लिए सीखें

सोमित श्रीवास्तव
संयुक्त आयुक्त (कार्मिक), के.वि.सं. (मु.)

मानव जीवन में शिक्षा का महत्व सदैव से रहा है। परंपरागत रूप से शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों को अतीत और वर्तमान के ज्ञान एवं कौशल से परिचित कराना है, ताकि वे जीवन के समकालीन संदर्भों में स्वयं को सक्षम बना सकें और भविष्य की भूमिका का निर्वहन कर सकें। किंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्पष्ट किया है कि केवल इस परिपाटी तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है। भविष्य की अनिश्चितताएँ इतनी गहन और जटिल हैं कि उन्हें पूरी तरह समझ पाना संभव नहीं है।

इस संदर्भ में यह मानना समीचीन है कि वर्तमान ज्ञान और उसकी स्थापित संरचनाएँ सदैव पर्याप्त नहीं होंगी। जीवन और विशेषकर शिक्षा के लिए अनुकूलनशीलता और दृढ़ता की आवश्यकता है। अपने ज्ञान की सीमाओं को स्वीकार करने की विनम्रता और स्वयं को निरंतर निखारने, सीखने तथा नए कौशल अर्जित करने का संकल्प ही 21वीं सदी के जीवन का आधार बनेगा। कभी-कभी पुराने ज्ञान को त्यागना या उसकी पुनः व्याख्या करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना नवीन ज्ञान को आत्मसात करना। प्रौद्योगिकी और ज्ञान की उभरती धाराओं के अनुरूप स्वयं को ढालना ही सफलता का मूलमंत्र है।

एनईपी जीवन को खंडों में विभाजित न मानकर, एक सजीव और समन्वित इकाई मानती है। यही कारण है कि शिक्षण में विविधता, विद्यार्थियों को समृद्ध अनुभव प्रदान करना, विषयों और पद्धतियों का विस्तार, तथा शिक्षण में तकनीक का विवेकपूर्ण समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है। आज की नवीन और अप्रत्याशित तकनीकें जीवन की सामान्य सीमाओं को अभूतपूर्व रूप से परिवर्तित कर रही हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए अनुकूलनशीलता और दृढ़ता सबसे मूल्यवान गुण सिद्ध होंगे।

एक प्रभावी शिक्षक के लिए आजीवन अध्ययन, लेखन, चिंतन और आत्म-परिष्कार की साधना आवश्यक है। वास्तव में, एक अच्छा शिक्षक सदैव एक अच्छा विद्यार्थी भी होता है, और एक अच्छा विद्यार्थी किसी न किसी रूप में शिक्षक भी बन जाता है। अध्यापन स्वयं में सीखने का सबसे शक्तिशाली साधन है। प्रायः श्रेष्ठ अंतर्दृष्टियाँ शिक्षक को अध्यापन के दौरान ही प्राप्त होती हैं। 'सीखने के लिए पढ़ाएं और पढ़ाने के लिए सीखें' - यही सतत उन्नति और संतोष का चक्र है।

शिक्षण क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों का स्वयं स्वास्थ्य, ऊर्जा और संतुलन का प्रतीक होना अनिवार्य है। यह तभी संभव है जब वे अनुशासित, संयमित और संतुलित जीवनशैली अपनाएँ। आज उपलब्ध विविध व्यायाम और जीवनशैली विकल्प प्रत्येक शिक्षक के लिए इस दिशा में सहायक हो सकते हैं।

सबसे बढ़कर, विद्यार्थियों के प्रति सच्चा प्रेम और उनके कल्याण को सर्वोपरि रखने की भावना ही एक सच्चे शिक्षक की आधारशिला है। जब तक यह तत्व विद्यमान नहीं होगा, तब तक विद्यार्थियों की ओर से स्थायी प्रेम और श्रद्धा की अपेक्षा व्यर्थ ही कहलाएगी।

जब जीवंत हो उठा भौतिक विज्ञान

सरदार सिंह चौहान
उपायुक्त, के.वि.सं. दिल्ली संभाग

प्रो. एच.सी. वर्मा ने पीएम श्री के.वि. क्र.2, दिल्ली छावनी में विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

11 और 12 अगस्त 2025 को पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, दिल्ली छावनी स्थित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार भौतिक विज्ञान की जीवंत अनुभूति का साक्षी बना।

सभागार में 400 से अधिक उत्सुक विद्यार्थी उपस्थित थे, जबकि देश के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के अनेक विद्यार्थी वर्चुअल माध्यम से जुड़े थे। इस पूरे आयोजिन के केंद्र में खड़े थे वह व्यक्ति जिन्होंने पीढ़ियों को प्रेरित किया- प्रोफेसर एच. सी. वर्मा, प्रख्यात भौतिक विज्ञानी और लेखक, जिनका नाम भौतिकी का पर्याय बन चुका है। हर प्रयोग, हर जीवनसंगत उदाहरण के माध्यम से उन्होंने भौतिकी को केवल सूत्रों का विषय नहीं बल्कि प्रकृति की जीवंत कहानी बनाया है। विद्यार्थी, जो पहले भौतिकी को जटिल मानते थे, अब इसे संपूर्ण ब्रह्मांड की भाषा के रूप में देखने लगे।

इस कार्यशाला में अन्य प्रख्यात विद्वानों ने भी भाग लिया- प्रो. देशदीप सहदेव और प्रो. बृजेश कुमार पांडेय, जिन्होंने विचारों और शिक्षण में नई गहराई और आयाम जोड़े। उन्होंने केवल पढ़ाया नहीं, बल्कि प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और खोज करने की संस्कृति को भी प्रज्वलित किया।

> जो विद्यार्थी पहले भौतिकी को जटिल मानते थे, वे सत्र के बाद इसे ब्रह्मांड की भाषा के रूप में देखने लगे।

कार्यशाला का दूसरा दिन शिक्षकों के लिए समर्पित था, जो जिज्ञासा के मशालवाहक हैं। हाथों-हाथ रणनीतियों और नवीन शिक्षण दृष्टिकोण के माध्यम से उन्हें सिर्फ भौतिकी पढ़ाना ही नहीं, बल्कि इसे अनुभव करने, जीने और प्रेम करने योग्य बनाने का सामर्थ्य दिया गया।

दो दिनों के अंत तक एक बदलाव स्पष्ट था। कक्षाएं अब केवल दिनचर्या का हिस्सा नहीं रहीं; वे अन्वेषण और खोज का स्थान बन चुकी थीं। विद्यार्थी प्रेरित होकर लौटे, शिक्षक सशक्त होकर लौटे, और भौतिकी ने एक नया आयाम प्राप्त किया।

इस प्रेरणादायक सफलता से उत्साहित होकर, के.वि.सं. दिल्ली संभाग अब एक और विषय को जीवंत बनाने की तैयारी कर रहा है। अगली कड़ी में गणित विषय को लेकर ऐसा ही आयोजन किया जाएगा।

79वां स्वतंत्रता दिवस

हर घर तिरंगा : घर-घर से उठे राष्ट्रभक्ति की गूँज

नई दिल्ली

देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में हर घर तिरंगा अभियान का उत्साहपूर्ण आयोजन हुआ, जिसने विद्यालय परिसरों को गर्व और देशभक्ति की भावना से भर दिया। विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी रंगोलियों, सृजनात्मक प्रदर्शनों और सशस्त्र बलों व पुलिस कर्मियों को समर्पित भावपूर्ण पत्रों के माध्यम से अपने राष्ट्रप्रेम का प्रदर्शन किया। तिरंगा रैलियों में गूँजते जोशीले नारों ने वातावरण को देशभक्ति से सराबोर कर दिया, वहीं MYGOV पर आयोजित क्विज़ ने विद्यार्थियों की भारत की विरासत के प्रति जागरूकता को और समृद्ध किया। विद्यालयों और घरों पर तिरंगा लहराते हुए विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षकों ने एकजुटता का संदेश देते हुए स्वतंत्रता का उत्सव मनाया और मातृभूमि के लिए बलिदान हुए वीरों को नमन किया।

केन्द्रीय विद्यालयों की श्रेष्ठ कार्यप्रणालियाँ

कथा चित्र: लघु फिल्मों के माध्यम से सामाजिक बदलाव की बुनाई

रचनात्मकता और सामाजिक प्रभाव के लिए तीन फ़िल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।

तरुण कुमार दास
प्राथमिक शिक्षक, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोरापुट

ओडिशा के शांत से दिखने वाले क्षेत्र कोरापुट में एक कैमरे की नज़र असाधारण बदलाव की किरण जगा रही है। ***कथा चित्र,*** जो मेरे सपने से जन्मा एक उपक्रम है, लघु फिल्मों को सामाजिक जागरूकता के औज़ार में बदल रहा है, जहाँ बच्चे, अभिभावक, शिक्षक और पूर्व छात्र मिलकर ऐसी कहानियाँ बुनते हैं, जो वास्तव में मायने रखती हैं।

अब तक इस पहल के अंतर्गत सात प्रभावशाली लघु फिल्में प्रस्तुत की गई हैं — **पहिया कुर्सी** (समावेशी शिक्षा), **दादाजी का थैला** (सिंगल-यूज़ प्लास्टिक), **सड़क** (सड़क सुरक्षा), **हर घर तिरंगा** (राष्ट्रीय गौरव), **बच्चों की जुबानी** (सड़क सुरक्षा), **परिवर्तन** (एचआईवी/एड्स), और **मास्टर जी** (सड़क सुरक्षा)। इनमें से तीन फिल्मों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है — ***पहिया कुर्सी*** (अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-कॉन्टेंट प्रतियोगिता 2025), ***दादाजी का थैला*** (अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-कॉन्टेंट प्रतियोगिता 2024) और ***सड़क*** (नेशनल रोड सेफ़्टी शॉर्ट फ़िल्म फ़ेस्टिवल 2022) को रचनात्मकता और सामाजिक प्रभाव के लिए पुरस्कृत किया गया। ***मास्टर जी*** फ़िल्म को सड़क सुरक्षा संदेश के लिए छत्तीसगढ़ पुलिस से सराहना मिली।

लेकिन ***कथा चित्र*** केवल फिल्मों का संग्रह भर नहीं है बल्कि, यह एक सामुदायिक आंदोलन है। विद्यार्थी अभिनेता, पटकथा लेखक और तकनीकी दल की भूमिकाओं में ढल जाते हैं और इस प्रक्रिया में आत्मविश्वास, सहानुभूति और टीमवर्क सीखते हैं। अभिभावक प्रॉप्स और वेशभूषा उपलब्ध कराते हैं, शिक्षक पटकथाओं को मार्गदर्शन देते हैं, और पूर्व छात्र शूटिंग, संपादन व प्रचार में सहयोग करते हैं। बेहद सीमित बजट, पुनर्नवीनीकृत वस्तुएँ और विद्यालय परिसर को सेट के रूप में प्रयोग करने से रचनात्मकता संसाधनों की कमी के बीच भी फलती-फूलती है।

इसका प्रभाव परदे से कहीं आगे तक जाता है। बच्चे संवाद-कौशल और निर्भीक सार्वजनिक भाषण से निखरते हैं, वहीं अभिभावक अपने बच्चों से और गहरे जुड़ाव का अनुभव करते हैं। शिक्षक मूल्यों को कक्षा में रोचक और जीवंत ढंग से संचारित करने के नए रास्ते पाते हैं। हर फिल्म समाज का आईना बनती है—उसकी चुनौतियों को दिखाते हुए समावेशन, जिम्मेदारी और सहानुभूति पर चर्चाओं को जन्म देती है।

मूल रूप से, ***कथा चित्र*** यह साबित करता है कि कहानियाँ वह कर सकती हैं, जो किताबें अक्सर नहीं कर पातीं—दिलों को छूना और बदलाव की प्रेरणा देना। कैमरा बच्चों के हाथ में देकर और समाज को सहभागी बनाकर यह पहल केवल फिल्में नहीं बना रही, बल्कि एक-एक फ्रेम में बदलाव के बीज बो रही है।

जब कला से मिला गणित का ज्ञान

एम. सुब्हा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित), पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, जलहल्ली, बेंगलुरु

एक गणित अध्यापक के रूप में मैं अक्सर अपने विद्यार्थियों से यह कहते हुए सुनती थी – *मैथ्स बहुत कठिन है, एक डरावना सपना है, कभी नहीं हो पाता, यह मेरे बस की बात नहीं है*...। जब यह शिकायत बार-बार सुनाई देने लगी, तो मैंने सोचा कि क्या मैं इस सोच को बदल सकती हूँ? **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** की रूपांतरणकारी दृष्टि से प्रेरित होकर मैंने **कला-एकीकृत अधिगम** की ओर कदम बढ़ाया । यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो गणित को अधिक आनंददायक, समावेशी और हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ता है।

मेरा लक्ष्य सीधा-सा था: अमूर्त गणितीय अवधारणाओं को बच्चों के जीवन से जोड़ना, ताकि वे इन्हें **रचनात्मक और अनुभवात्मक तरीकों** से समझ सकें। यहीं से हमारी यात्रा शुरू हुई — गणित को भारतीय कला से जोड़ने की।

हमने **कैरटीशियन प्लान** पर सुंदर पैटर्न बनाकर निर्देशांक जियोमेट्री को सजीव किया। वर्गमूल से बने सर्पिल आकारों ने विद्यार्थियों को अपरिमेय संख्याओं की कल्पना करने में मदद की। विद्यार्थियों को रंगोली के डिजाइन से सममिति का परिचय कराया। पारंपरिक मधुबनी और वारली कला ने यह दर्शाया कि जियोमेट्री हमारे सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में भी गहराई से मौजूद है। यहाँ तक कि फ्रेक्शन्स को भी कलात्मक आकृतियों के माध्यम से समझाया।

कक्षा की दीवारें गणितीय आकृतियों से जगमग हो उठीं। विद्यार्थी पहले से अधिक जिज्ञासु, आत्मविश्वासी और सक्रिय हो गए। वे सोच-समझकर प्रश्न पूछने लगे, मिलकर काम करने लगे और गणित को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न मानकर हर जगह — कला, प्रकृति और त्योहारों में देखने लगे।

जिस बात ने मुझे सबसे अधिक छुआ, वह था उनके चेहरों पर दिखने वाला गर्व। उन्हें केवल अपनी कलाकृतियों पर गर्व नहीं था, बल्कि उन गणितीय अवधारणाओं पर भी, जिन्हें उन्होंने पहली बार सही मायने में समझा। डर कम हो गया, उत्साह बढ़ा और विषय के प्रति प्यार गहराने लगा।

इस अनुभव ने मुझे याद दिलाया कि गणित केवल संख्याएँ और सूत्र नहीं है। यह रूप-रेखाओं, तर्क, सौंदर्य और सृजनशीलता की भाषा है। जब सीखना सार्थक बनता है, तो बच्चे केवल समझते ही नहीं, वे आनंद भी लेने लगते हैं।

हमने सिर्फ गणित को नहीं सीखा — हमने उसे महसूस किया, रचा और मनाया — एक सजीव, अभिव्यक्तिपूर्ण और जादुई अनुभव की तरह।

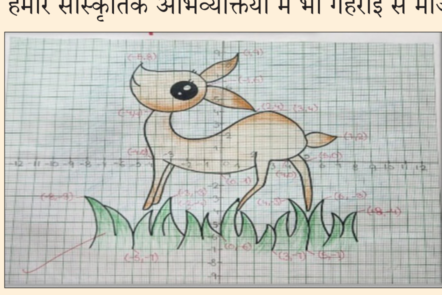

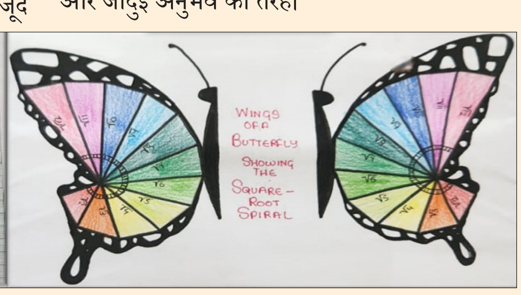

हर बच्चा सीख सकता है, हर शिक्षक प्रेरित कर सकता है

सबीहा शाहिन
प्रधानाचार्य, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, साल्ट लेक, कोलकाता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में एक ऐसा विश्वास है जो सरल भी है और क्रांतिकारी भी—हर बच्चा सीखने में सक्षम है और हर शिक्षक प्रेरणा देने की शक्ति रखता है।

हमने इस विश्वास को अपने विद्यालय में परखने का निर्णय लिया। हमने शुरुआत किसी बड़े सुधार से नहीं बल्कि, एक छोटे से अवलोकन से की: बच्चे कई कारणों से विद्यालय आते हैं। कोई खेल के मैदान के लिए, कोई पुस्तकालय के लिए, कोई मित्रों से मिलने के लिए, और कई तो केवल इसलिए कि वे देखे और सराहे जाना चाहते हैं।

अपने विद्यार्थियों को और बेहतर समझने के लिए, हमने कक्षा 9 से 12 तक के लिए एक प्रश्नावली आयोजित की। परिणाम अद्भुत थे:

- 85% विद्यार्थियों ने प्रतिदिन खेल का पीरियड चाहा।
- 87% ने खेल को अपनी पसंदीदा गतिविधि बताया, जबकि 9% ने पुस्तकालय को चुना।
- 94% ने भोजनावकाश के बाद खेल को प्राथमिकता दी।

संदेश स्पष्ट था: खेल कोई व्यवधान नहीं, बल्कि आकर्षण का केन्द्र है। इसलिए हमने अपनी समय सारणी को नए सिरे से तैयार किया। खेल को हमने दैनिक वादा बनाया, न कि कोई दुर्लभ पुरस्कार। यहाँ तक कि सुधारात्मक कक्षाओं के बाद भी, हमने बच्चों को घर भेजने से पहले खेल का समय सुनिश्चित किया। समय सारणी का यह छोटा बदलाव शीघ्र ही विद्यालय के माहौल का बड़ा परिवर्तन बन गया। विद्यार्थी उत्साह से आने लगे और शिक्षक उनका स्नेह और ऊर्जा से स्वागत करने लगे।

परंतु वास्तविक रूपांतरण तब हुआ जब हमने "पिग्मेलियन प्रभाव" को अपनाया—यह विचार कि ऊँची अपेक्षाएँ ऊँची उपलब्धियों को जन्म देती हैं। हमने छिपी हुई क्षमता वाले विद्यार्थियों की पहचान की और शिक्षकों से कहा कि उन्हें सामान्य नहीं, बल्कि अधिक सक्षम समझें। परिणामस्वरूप, शिक्षकों की दृष्टि बदली। उन्होंने विद्यार्थियों से बेहतर अपेक्षाएँ रखीं, विश्वास के साथ संवाद किया और बच्चों ने उस विश्वास को साकार किया। उनका आत्मविश्वास बढ़ा, प्रदर्शन सुधरा और सबसे महत्वपूर्ण—विश्वास की डोर दोनों ओर से और मजबूत हुई।

जो शुरुआत समय सारणी से हुई थी, वह अब दिलों का आंदोलन बन चुकी थी। विद्यार्थियों ने जाना कि उनकी आवाज़ की कद्र है, उनकी रुचियाँ महत्वपूर्ण हैं और उनकी क्षमताएँ सम्मानित हैं। शिक्षकों ने जाना कि प्रेरणा केवल अध्यापन से नहीं, बल्कि विश्वास, प्रोत्साहन और जुड़ाव से उपजती है।

और इसी विश्वास और अपेक्षा, आनंद और विकास के चक्र में हमने एक सच्चाई को अपनी आँखों के सामने जीवंत होते देखा:

जब बच्चे सुने जाते हैं, वे खिलते हैं; और जब शिक्षक सशक्त होते हैं, तो वे प्रेरित करते हैं।

"जब पोषित किया जाए, तो संभावनाएँ असीमित होती हैं।"

सक्सेस स्टोरी

बुलबुल से राष्ट्रपति गाइड अवार्ड तक - मेरी यात्रा

कृष्टि दास
छात्रा, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खानापारा

मेरी यात्रा भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के साथ वर्ष 2014 से आरंभ हुई, जब मैंने एक बुलबुल के रूप में इसमें पहला कदम रखा। उस समय मैं केवल अपने बड़े भाई और बहन के पदचिह्नों पर चल रही थी, जो स्वयं गर्वित केवीयन्स थे और पहले से ही इस गौरवशाली आंदोलन का हिस्सा बने हुए थे। परंतु जो शुरुआत मात्र प्रेरणा से हुई थी, वह शीघ्र ही मेरे जीवन का जुनून बन गई। इसमें मेरी माँ का अटूट प्रोत्साहन और स्नेहिल सहयोग सबसे बड़ी शक्ति रहा, जिन्होंने हमेशा मुझे कक्षा की सीमाओं से परे जाकर जीवन के नए आयाम खोजने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 2016 में मैंने गाइड की भूमिका निभाई और यह भूमिका मेरे लिए अनुभवों का एक ऐसा द्वार बनी, जिसने मेरी क्षमता, नेतृत्व और दृढ़ संकल्प को निरंतर परखा। हर उपलब्धि मुझे धीरे-धीरे मेरे लक्ष्य – राष्ट्रपति गाइड अवार्ड – के करीब ले जाती रही।

सन 2018 में मुझे तृतीय सोपान परीक्षण शिविर में भाग लेने का अवसर मिला। यहाँ मैंने अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास के महत्व को आत्मसात किया। उसी वर्ष डिविजनल रैली कैंप तथा राष्ट्रीय एकता शिविर ने मेरे दृष्टिकोण को और विस्तृत किया और मुझे पूरे देश की गाइड्स से जोड़ने का अमूल्य अवसर प्रदान किया।

2019 में मैंने राज्य पुरस्कार परीक्षण शिविर में भाग लिया, जो राष्ट्रपति पुरस्कार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस दौरान निष्ठा, सामुदायिक सेवा और वास्तविक परिस्थितियों में नेतृत्व का अभ्यास मेरे व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन गया।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने मुझे केवल शैक्षिक उपलब्धियाँ ही नहीं दीं, बल्कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से रचनात्मकता, नेतृत्व और समय प्रबंधन के मूल्य भी सिखाए। यही मूल्य मुझे 2022 में आयोजित राष्ट्रपति पुरस्कार परीक्षण शिविर तक ले गए।

वह क्षण मेरे जीवन का सबसे गौरवपूर्ण क्षण था, जब मैं राष्ट्रपति भवन में खड़ी थी और भारत की मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से राष्ट्रपति गाइड पुरस्कार – 2021 प्राप्त कर रही थी। हाथों में थामा हुआ सम्मान-पत्र केवल एक दस्तावेज़ नहीं था, बल्कि वर्षों की कठिन मेहनत, सेवा-भावना और सीख का सजीव प्रतीक था। यह उपलब्धि केवल मेरी नहीं थी, बल्कि मेरे परिवार, मेरे विद्यालय और भारत स्काउट्स एवं गाइड्स आंदोलन की साझा सफलता थी।

आज मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस में इतिहास ऑनर्स की छात्रा हूँ। फिर भी, मेरे भीतर वह अनुशासन, सेवा-भाव और नेतृत्व की ज्योति आज भी उतनी ही प्रखर है, जिसकी शुरुआत एक नन्हीं बुलबुल के पहले कदम के साथ हुई थी।

मियावाकी वन
चेन्नई के केन्द्रीय विद्यालयों में अनूठी हरित पहल

मिनी मुल्लथ
■ *सहायक आयुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई*

चेन्नई संभाग के पाँच केन्द्रीय विद्यालयों - पीएम श्री के.वि. सीआरपीएफ आवड़ी, पीएम श्री के.वि. शिवगंगा, पीएम श्री के.वि. कोयंबुत्तूर, पीएम श्री के.वि. वेलिंग्टन और पीएम श्री के.वि. सुलूर ने अनुपयोगी भूमि को हरे-भरे ***मियावाकी वनों*** में बदल दिया है। यह पहल साबित करती है कि धरती का हर छोटा टुकड़ा भी जीवन से खिल सकता है। प्रधानाचार्यों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की साझा दृष्टि से शुरू हुआ यह प्रयास आज आशा, एकता और *सतत विकास* का आंदोलन बन चुका है।

मियावाकी का जादू

जापानी वनस्पति वैज्ञानिक **डॉ. अकीरा मियावाकी** द्वारा विकसित इस पद्धति से जंगल पारंपरिक वृक्षारोपण की तुलना में *10 गुना तेज़ और 30 गुना घने* उगते हैं। स्थानीय प्रजातियों को पास–पास लगाकर कुछ ही वर्षों में यह क्षेत्र *स्वावलंबी पारिस्थितिक तंत्र* में बदल जाता है, जो बंजर ज़मीन में नई जान फूँक देता है।

रूपांतरण की कहानियाँ

आवड़ी – दृढ़ता का वन

पीएम श्री के.वि. सीआरपीएफ आवड़ी ने ***दमूगा फाउंडेशन*** के सहयोग से 11,000 वर्गफुट क्षेत्र में 2,600 पौधे लगाए। पानी की गंभीर समस्या के बावजूद अभिभावकों ने 200 फीट गहरा बोरवेल खुदवाने के लिए धन उपलब्ध कराया, जिससे जंगल की सिंचाई संभव हो सकी। आज विद्यार्थी स्वयं पौधों की देखभाल करते हैं और कभी बंजर रही यह भूमि अब एक हरा-भरा *आश्रय-स्थल* बन चुकी है।

कोयंबुत्तूर – एकता का वन

पीएम श्री के.वि. कोयंबुत्तूर ने ***सिरुथुली एनजीओ*** के सहयोग से 2.5 एकड़ झाड़ीदार भूमि को मियावाकी वन में बदला। कुल 64 स्थानीय प्रजातियों के 2,700 पौधे लगाए गए, जिनमें से 2,200 पौधों का प्रायोजन ***पीएसजीआर कृष्णाम्मल कॉलेज फॉर वीमेन*** ने तथा 500 पौधों का ***एनएनआरसी ईएलसीए*** **(वरिष्ठ नागरिक सहायता केंद्र)** ने किया। इस पहल ने 1,500 से अधिक विद्यार्थियों, 120 शिक्षकों, कॉलेज प्रशासन, वरिष्ठ नागरिकों और स्थानीय समाज को एक साथ जोड़ा।

शिवगंगा – जीवंत कक्षा

पीएम श्री के.वि. शिवगंगा ने ***वानीयनगुड़ी पंचायत*** के सहयोग से 32,600 वर्गफुट भूमि पर 6,000 पौधे लगाए। सिंचाई के लिए बोरवेल और सबमर्सिबल पंप लगाया गया। आज यह नन्हा जंगल 6–7 फीट ऊँचा हो चुका है और यहाँ *पक्षी, खरगोश, गिलहरी और मोर* तक आने लगे हैं।

सुलूर – नई शुरुआत का वन

पीएम श्री के.वि. सुलूर ने 6,000 वर्गफुट अनुपयोगी भूमि पर ***इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन*** के सहयोग से सफाई, भूमि सुधार और 600 स्थानीय पौधों की रोपाई की।

के.वि. के विद्यार्थियों ने अनुपयोगी भूमि को बनाया हरियाली से भरपूर मियावाकी वन

मियावाकी वन एक ऐसा छोटा-सा जंगल होता है जो बहुत जल्दी और घना उगता है। इसमें केवल देशी (स्थानीय) पेड़-पौधे लगाए जाते हैं। मियावाकी पद्धति में अलग-अलग तरह की स्थानीय प्रजातियों को पास-पास रोपा जाता है, ताकि यह जंगल बिल्कुल प्राकृतिक वन जैसा दिखाई दे और पर्यावरण को समृद्ध बना सके।

सिर्फ हरियाली नहीं – एक धरोहर

यह वन केवल पेड़-पौधों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह..

- शहर के प्रदूषण से लड़ने में मदद करते हैं।
- यह *आवास स्थल* है, जहाँ पशु-पक्षी अपना घर बनाते हैं।
- *यह आशा के प्रतीक हैं,* जो बच्चों को याद दिलाते हैं कि एक छोटा कदम भी दुनिया बदल सकता है।

वेलिंग्टन– विविधता में एकता का वन

पीएम श्री के.वि. वेलिंग्टन ने 13,000 वर्गफुट भूमि को मियावाकी वन के लिए समर्पित कर दिया। ***भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई)*** ने भूमि तैयार करने में मदद की और ***मद्रास रेजीमेंट सेंटर (एमआरसी)*** ने इसके लिए 400 पौधे दान किए। 14 अगस्त 2025 को भारतीय सैनिकों और विद्यार्थियों ने कंधे से कंधा मिलाकर पौधे लगाए, जिससे यह आयोजन *एकता, सेवा और पर्यावरण-प्रेम* का भावपूर्ण प्रतीक बन गया।

राष्ट्रीय दृष्टि से जुड़ा प्रयास

मिशन लाइफ और ***एक पेड़ माँ के नाम*** जैसी राष्ट्रीय पहलों की भावना को मूर्त रूप देते हुए यह मियावाकी वन *विद्यालयों को समाज से* और *विद्यार्थियों को प्रकृति से* जोड़ते हैं।

संरक्षकों की नई पीढ़ी

इन विद्यालयों द्वारा लगाया गया हर पौधा एक वचन है— एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने का जो *धरती की रक्षा उतने ही प्रेम से करेगी, जितने प्रेम से इन वनों को सींचा गया है।*

संस्कृत प्रवाह

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

अर्थ

(जिस तरह) उदय होते समय सूर्य लाल होता हैं और अस्त होते समय भी लाल होता हैं, (वैसे ही) महापुरुष भी सुख और दुःख में समान रहते हैं। (उन के स्वभाव में परिवर्तन नही होता)।

सबको शिक्षा-अच्छी शिक्षा

तीन नये के.वि. का शुभारंभ

भारत सरकार द्वारा दिसम्बर 2024 में स्वीकृत 85 नये केन्द्रीय विद्यालयों में से तीन और विद्यालय अगस्त माह में कार्यशील हो गए हैं। इसके साथ ही केन्द्रीय विद्यालयों की कुल संख्या बढ़कर 1288 विद्यालयों तक पहुँच गई है।

नये प्रारंभ हुए केन्द्रीय विद्यालय:

- के.वि इलरगी (रायचूर, कर्नाटक)
- के.वि. एएफएस फलौदी (राजस्थान)
- के.वि. रामकोट (कठुआ, जम्मू-कश्मीर)

मिशन कर्मयोगी

कुशल एवं नागरिक-केन्द्रित सेवा प्रदान हेतु कार्यबल को सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय कर्मयोगी - व्यापक जन सेवा कार्यक्रम 2025 के अंतर्गत अगस्त 2025 में 20,000 से अधिक केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कार्य संस्कृति में बदलाव कर कार्यबल की दक्षता बढ़ाना और जनोन्मुखी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना था।

कर्मयोगी भारत
लोकहितं मम करणीयम्

विचारणीय विचार

मैंने नींद में सपना देखा कि जीवन आनंद है। जब मैं जागा, तो मैंने देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की, और तब मुझे एहसास हुआ कि सेवा ही सच्चा आनंद है।

~ रबीन्द्रनाथ टैगोर

अगस्त 2025 की झलकियाँ

रक्षाबंधन पर भारत की राष्ट्रपति से विशेष मुलाकात

नई दिल्ली: रक्षाबंधन के पावन अवसर पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों को राष्ट्रपति भवन में भारत की मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आत्मीय संवाद और हार्दिक शुभकामनाओं के आदान-प्रदान ने वातावरण को और अधिक भावपूर्ण बना दिया।

भारत की राष्ट्रपति से मिला विशेष आमंत्रण

नई दिल्ली: 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर के.वि. एनएफआर लुमडिंग की छात्रा एवं प्रेरणा कार्यक्रम की पूर्व प्रतिभागी सान्वी शर्मा को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एट-होम रिसेप्शन में आमंत्रित किया गया। इस दौरान उन्हें भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ संवाद करने का अवसर भी मिला।

केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों से मिले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

बेंगलुरु, 10 अगस्त 2025: पीएम श्री के.वि. एमजी रेलवे, बेंगलुरु के विद्यार्थियों को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से मिलने और संवाद का अवसर प्राप्त हुआ। यह मुलाकात केएसआर रेलवे स्टेशन पर तीन वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों के भव्य उद्घाटन समारोह के दौरान हुई।

प्रधानमंत्री संग मेट्रो सफर: के.वि. विद्यार्थियों के लिए अनोखा अनुभव

कोलकाता, 22 अगस्त 2025: केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों को मा. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ मेट्रो यात्रा के दौरान संवाद का दुर्लभ अवसर मिला। जसोर रोड से जय हिंद विमानबंदर तक की इस यात्रा ने साधारण सफ़र को प्रेरणा से भरे एक अविस्मरणीय कक्षा के रूप में बदल दिया।

मुख्यमंत्री संग बंधे स्नेह के धागे

नई दिल्ली: पीएम श्री के.वि. पीतमपुरा के विद्यार्थियों ने दिल्ली की मा. मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने स्नेह और शुभकामनाओं के धागों से बंधकर यादगार पल साझा किए, जिसने बच्चों के हृदयों को आत्मीय बंधन में जोड़ दिया।

ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने के.वि. के विद्यार्थी

नांदेड़, 26 अगस्त 2025: पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एससीआर नांदेड़ के विद्यार्थियों और शिक्षकों को हज़ूर साहिब नांदेड़–सीएसएमटी को जोड़ने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस की उद्घाटन यात्रा में आमंत्रित किए जाने का गौरव प्राप्त हुआ। इस ऐतिहासिक क्षण ने विद्यालय परिवार को अपार हर्ष और गर्व से भर दिया, जहाँ विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों ने मिलकर इस अविस्मरणीय अवसर को संजोया।

कटक में नये केन्द्रीय विद्यालय का शिलान्यास

कटक, 23 अगस्त 2025: माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कटक में नए भवन हेतु केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 का भूमिपूजन और शिलान्यास किया। इस अवसर ने क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुदृढ़ आधार देने और विद्यार्थियों के लिए बेहतर शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम को चिह्नित किया।

हाजीपुर में केन्द्रीय विद्यालय का भूमिपूजन

हाजीपुर, 10 अगस्त 2025: केन्द्रीय विद्यालय हाजीपुर का भूमिपूजन मा. शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान की वर्चुअल उपस्थिति में तथा स्थल पर भारत सरकार के मा. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री चिराग पासवान द्वारा सम्पन्न हुआ। यह अवसर हाजीपुर क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के नए द्वार खोलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षकों को किया गया सम्मानित

नई दिल्ली, 17 अगस्त 2025: राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) के 31वें स्थापना दिवस समारोह में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के तीन विशिष्ट शिक्षकों- विनय कुमार, प्राचार्य, के.वि. क्र. 2 ईटानगर, प्रीति श्रीवास्तव, पीजीटी अंग्रेजी, के.वि. क्र. 3 ओएनजीसी सूरत, रीतु शर्मा, पीआरटी, के.वि. बंदायूं को माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने सम्मानित किया। इन्हें एनएमएम पोर्टल पर 100 से अधिक सत्रों का संचालन करने के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

मेगा टिंकरिंग डे 2025 का आयोजन

देशभर के के.वि. में मेगा टिंकरिंग डे 2025 बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। यह राष्ट्रीय पहल अटल इनोवेशन मिशन, नीति आयोग तथा शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई ।इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता, नवाचार और प्रायोगिक STEM अधिगम को प्रोत्साहित करना था। आयोजन के दौरान विद्यार्थियों को 30 मिनट का समय दिया गया, जिसमें उन्होंने मिलकर एक अभिनव परियोजना तैयार की। यह आयोजन विद्यार्थियों में अनुभवात्मक शिक्षा, समस्या समाधान और टीम वर्क की भावना को उजागर करने वाला रहा और भावी नवोन्मेषकों व उद्यमियों को तैयार करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

टेक्नोथलॉन 2025 में के.वि. का जलवा

के.वि. के विद्यार्थियों ने टेक्नोथलॉन 2025 में उल्लेखनीय सफलता हासिल कर समस्त के.वि.सं. परिवार को गौरवान्वित किया। यह प्रतियोगिता आईआईटी गुवाहटी के टेक्निचे द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय विद्यालय चैम्पियनशिप का 22वाँ संस्करण है। इस वर्ष सीनियर श्रेणी में शॉर्टलिस्ट की गई 25 टीमों में से 12 टीमें केन्द्रीय विद्यालयों से हैं, वहीं जूनियर श्रेणी में भी 5 के.वि. टीमों ने स्थान सुनिश्चित किया है। यह युवा नवप्रवर्तक आईआईटी गुवाहटी में आयोजित होने वाले मुख्य चरण (मेन) में हिस्सा लेंगे। इस तीन दिवसीय आयोजन में समस्या-समाधान तथा विश्लेषणात्मक कार्यों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

एक नेता बना शिक्षक: विद्यार्थियों को किया प्रेरित

अशोक नगर, 23 अगस्त 2025: केन्द्रीय विद्यालय अशोक नगर के विद्यार्थियों के लिए यह दिन विशेष रहा जब मा. केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने उनके साथ आत्मीय संवाद किया। अपने सरल स्वभाव और शिक्षाप्रद अंदाज़ से उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया और उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर दिया। यह संवाद केवल औपचारिक बातचीत न होकर एक ऐसे अनुभव में बदल गया, जहाँ एक नेता के भीतर छिपा शिक्षक बाहर आ गया।

चमकते सितारे

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2025

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोरापुट, ओडिशा के शिक्षक श्री तरुण कुमार दाश (पीआरटी) को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान और विद्यार्थियों के समग्र विकास में उनके समर्पण के लिए प्रदान किया गया। उन्हें 5 सितम्बर 2025 को राष्ट्रपति भवन में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

तैराकी में सुब्रह्मण्य ने जीते 7 पदक

अहमदाबाद में आयोजित 51वीं जूनियर नेशनल एक्वाटिक चैम्पियनशिप में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मल्लेश्वरम के कक्षा 9 के छात्र सुब्रह्मण्य जीवम्श ने तैराकी में अपने अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया। उन्होंने इस प्रतियोगिता में कुल 7 पदक अपने नाम किए, जिनमें 3 स्वर्ण, 1 रजत और 3 कांस्य पदक शामिल हैं ।

विश्व मंच पर गणित में महारत

सारबेश विक्रमन ने 'इंटरनेशनल मेंटल अर्थमैटिक चैम्पियनशिप' में फ्लैश कैलकुलेशन में सर्वोच्च स्कोर प्राप्त कर 'फ्लैश अंगन डिवीजन वर्ल्ड चैम्पियन' का खिताब अपने नाम किया।

पिकलबॉल चैम्पियनशिप में स्वर्ण थ्रो

पीएम श्री केवी खरगोन की जनविका यादव ने इंदौर में आयोजित 9वीं मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय पिकलबॉल चैम्पियनशिप 2025 में स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय और जिले का नाम रोशन किया।

पैरा स्पोर्ट्स मीट में गोल्डन स्मैश

गुवाहटी में 8 से 10 अगस्त 2025 तक 5वीं ऑल असम पैरा स्पोर्ट्स मीट 2025 आयोजित की गई, जिसमें केन्द्रीय विद्यालय सिलचर के विद्यार्थी बिप्रजीत देब ने टेबल टेनिस में गोल्ड मेडल जीता।

एशियाई योगासन स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक

दुबई में आयोजित छठी एशियाई योगासन स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोकराझार, गुवाहटी के विद्यार्थी मास्टर लोचन छेत्री ने स्वर्ण पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया।

हाथी मेरे साथी

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोयंबुत्तूर की छात्रा कु. ए. टी. हर्षिता लक्ष्मी ने नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ नेचुरल हिस्ट्री द्वारा आयोजित 'मानव-हाथी सहअस्तित्व' विषयक पेंटिंग प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर के.वि.सं. का गौरव बढ़ाया।

एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में रजत पर निशाना

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय भिंड की शिवानी भदौरिया ने पं. रवि शंकर शुक्ल स्टेडियम, राइट टाउन, जबलपुर में आयोजित 61वीं राज्य स्तरीय अंतर-जिला एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में अंडर-16 भाला फेंक प्रतियोगिता में रजत पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

संरक्षक: प्राची पाण्डेय, आयुक्त, के.वि.सं.
प्रधान संपादक: चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)

संपादक मंडल: डि. मणिवण्णन, संयुक्त आयुक्त (शै.)
रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी
सचिन राठौर, सहायक संपादक

सहभागी: समस्त केन्द्रीय विद्यालय

सभी संभाग अपनी टिप्पणी और विशेष स्टोरी
निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं:
kvschronicle@gmail.com

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन
यह ई-प्रकाशन केवल आंतरिक वितरण हेतु के.वि.सं. (मु.) द्वारा प्रकाशित।